"अधूरा श्रृंगार"

श्रीमती राज चन्द्रा, पत्नी डॉ. योगेश चंद्रा (प्रोफेसर)
आई.आई.टी.,रूड़की

द्वार पर आकर तुम्हारें, कर दूँ अर्चना समर्पित,
कौन जाने देर तक दीया रह पाये न रह पाये,
प्यार की नौका चला मैं तुम्हें फिर चूम लूगां,
जिन्दगी के आर–पार कहीं तो तुमको मिलूंगा,
फिर डूबते से चल पड़े भंवर में मझदार में,
दूर तो बाधाएं प्रिय! हैं जो हमारे प्यार में,
कौन जाने सुबह तक ये उमंग रह पाये न रह पाये।।

प्रिय, तुम्हारे कुन्तलों में अपनी अमानत खोज लूं,
दो मुझे वरदान ऐसा, मौत सीने से लगा लूं,
जिन्दगी चल रहीयों, ज्यों धरा घूमती है,
प्रेम याद से विभोरित चकवी भी झूमती है,
ले बादलों की ओट तारिकायें सोई पड़ी है
प्राण! हर घड़ी मौसम बदलता जा रहा है,
कौन जाने तुम्हें फिर मेरी याद आये न आये।।

क्यों कर रही है पूर्ण, अधूरा गीत अब अपना है,
चलेगी रात रोती सी, हुआ हो भंग ज्यों सपना,
तुम्हारा विश्वास मन में भर आंधियों में मैं बढ़ूंगा,
तुम्हारे प्यार की बदौलत शेष दिन भी काट लूगां,
आज तुम्हे सीने लगा अलविदा मैं मांग लूं,
कौन जाने फिर कभी हम मिल पायें न मिल पायें।।

"तुम्हारी छाया में"

यह चमकती चांदनी, यह सितारों से भरा आकाश,
आज मुझे फिर दिख गया, दुबका हुआ प्रकाश।
हलाहल भरी यह जिन्दगी, और जिन्दगी की यह आस,
खो चुका हूं, आज मैं शूल भरे संसार का विश्वास।।

कौन, निमिष नयन लिये, मुझे खोजने है आ रहा,
कह दो, दूर से ही, लौट जाये, जिन्दगी का काफिला अब जा रहा।
यह कलियों का गुंजन, यह आज खिलती कलिका,
बुझना एक दिन है सभी को, ज्यों दिये की वर्तिका।।

यह डगमगाते चलते कदम, बढ़ती हुई यह मंजिलें,
इस अधूरी जिन्दगी के साथ, कब तक चलते चलें।
यह श्वांसों का आवागमन, संसार की यह ठोकरें जिन्दगी की राह में,
ठहरो प्रिय! तनिक ठहरो, आ रहा मैं तुम्हारे प्यार की छांह में।।